Impact Factor (SJIF): 6.092 E-ISSN: 2583-1615

International Journal of Research in Academic World

Received: 12/December/2023 IJRAW: 2024; 3(1):226-227 Accepted: 15/January/2024

संस्कृतिकरण की अवधारणा का विश्लेषणात्मक अध्ययन

*[1]डॉ. राजेश कुमार मीणा

*[1]सह-आचार्य, समाजशास्त्र विभाग, सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय, अजमेर भारत।

सारांश

संस्कृतिकरण की अवधारणा भारतीय जाति व्यवस्था की संरचना में होने वाले परिवर्तनों को स्पष्ट करने का प्रयास करती है। भारत की प्राचीन तथा आधुनिक राजनीतिक व्यवस्था भी संस्कृतिकरण की प्रक्रिया के अनुकूल रही है। संस्कृतिकरण की अवधारणा एक अनिश्चित अवधारणा के रूप में एक साथ भिन्न प्रक्रियाओं का बोध कराती है जैसे ब्राह्मणीकरण, पर-संस्कृत-ग्रहण, असमाजीकरण, विश्वव्यापीकरण, संकीर्णिकरण, पूर्वाभयासी समाजीकरण, प्रभावी जाती आदि, इस शोध पत्र में संस्कृतिकरण की अवधारणा का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द: संस्कृति, जाति-व्यवस्था, संस्कृतिकरण, पश्चिमीकरण, प्रभावी जातियां।

प्रस्तावना

भारतीय जाति-व्यवस्था जो कि भारतीय समाज एवं संस्कृति का एक मुख्य आधार स्तम्भ रही है और परिवर्तित भी होती रहती है। जाति व्यवस्था में खुलापन का विचार (एम.एन. श्रीनिवास, 1977) के संस्कृतिकरण की अवधारणा से भी स्पष्ट होता है।

संस्कृतिकरण की अवधारणा से श्रीनिवास ने भारतीय जाति व्यवस्था की संरचना में होने वाले परिवर्तनों को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। वैसे इसमें कोई शक नहीं है कि व्यक्ति और समूह के स्तर पर जाति परिवर्तन भारतीय समाज में सामाजिक गतिशीलता का मुख्य आधार रही है।

संस्कृतिकरण का संक्षिप्त अर्थ:

निचली जाति या आदिवासी समूह का ऊँची जाति के रीति-रिवाज, खानपान, वेशभूषा, पूजा-पद्धति अपनाकर अपनी सामाजिक स्थिति ऊपर उठाने की कोशिश करना।

एम.एन. श्रीनिवास ने संस्कृतिकरण शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग कर्नाटक राज्य के मैसूर स्थान पर कुर्ग लोगों के समाजिक एवं धार्मिक जीवन में होने वाले परिवर्तनों के विश्लेषण के लिए किया था। इस शब्द का प्रयोग पहली बार एम० एन० श्रीनिवास ने 1952 में अपनी पुस्तक (Religion And Society Amoung the coorgs of South India) में किया।

एम ० एन ० श्रीनिवास (1977) संस्कृतिकरण की परिभाषा को समय-समय पर बदलते रहे है। आरम्भ में उन्होंने संस्कृतिकरण को परिभाषित करते हुए बताया कि संस्कृतिकरण एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके अन्तर्गत निम्न जाति के लोग ब्राह्मणी जीवन प्रणाली (Brahminnial way of Life) को अपनाते है। श्रीनिवास ने अपनी इस परिभाषा में ब्राह्मणी आदर्श पर अनावश्यक बल दिया था तथा अन्य आदर्शों जैसे क्षत्रिय और वैश्य की उपेक्षा की।

श्रीनिवास ने इस परिभाषा में संशोधन लाते हुए निम्नलिखित ढंग से परिभाषित किया - संस्कृतिकरण वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा कोई निम्न हिन्दू जाति या कोई जनजाति अपना कोई अन्य समूह किसी उच्च और प्रायः द्विज जाति की दिशा में अपने रीति-रिवाज, कर्मकाण्ड, विचारधारा और जीवन पद्धति को बदलता है।"

पुनः संशोधन कर श्रीनिवास द्वारा स्पष्ट किया कि संस्कृतिकरण के अन्तर्गत यह आवश्यक नहीं है कि कोई निम्न जाति किसी उच्च और प्रायः द्विज जाति की जीवन पद्धति को अपनाए। इसकी जगह पर उन्होंने यह कहा कि किसी स्थानीय प्रभावी जाति (Dominant Caste) को आदर्श मानकर अपनी जीवन शैली में परिवर्तन लाना भी संस्कृतिकरण माना जायेगा।

उक्त परिभाषाओं में इस परिवर्तन से ऐसा लगता है कि संस्कृतिकरण के अन्तर्गत एम०एन० श्रीनिवास संदर्भ समूह के क्षेत्र को बढ़ाते और बदलते है। उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि श्रीनिवास ने जातिय गतिशीलता को स्पष्ट करने के लिए संस्कृतिकरण शब्द का प्रयोग किया।

संस्कृतिकरण की विशेषताएं

1. संस्कृतिकरण का संबंध मुख्यतः निम्न जातियों की जीवन शैली में होने वाले परिवर्तनों से है।
2. संस्कृतिकरण की प्रक्रिया से संबंधित जातियों में मात्र पद मूलक परिवर्तन (Postioual) होता है न कि संरचनात्मक (Structural) कहने का तात्पर्य यह है कि जाति व्यवस्था की संरचना में कोई परिवर्तन नहीं होता है, बल्कि संबंधित "जाति के पद सोपान

*Corresponding Author: डॉ. राजेश कुमार मीणा

क्रम" (Hierarchy) में चढ़ाव मात्र होता है।
3. संस्कृतिकरण की प्रक्रिया केवल निम्न हिन्दू जातियों में ही नहीं बल्कि जनजातियों और अर्द्ध-जनजाति समूहों में भी पायी जाती है।
4. संस्कृतिकरण के अनेक प्रारूप हो सकते है जैसे ब्राह्मण, राजपूत, वैश्य या अन्य प्रभावी जाति।
5. संस्कृतिकरण गतिशिलता की एक सामूहिक प्रक्रिया है न कि व्यक्तिगत।
6. भारतीय संदर्भ में संस्कृतिकरण सार्वभौमिक प्रक्रिया रही है।
7. संस्कृतिकरण की प्रक्रिया से गुजरने वाली जातियां संस्कृत साहित्य में उपलब्ध विचारों और मूल्यों को भी स्वीकार कर लेते है तथा पाप-पुण्य, संसार, धर्म-कर्म, माया और मोक्ष आदि।
8. संस्कृतिकरण की प्रक्रिया के बाद निम्न जाति, जनजाति या अन्य जाति समूह दो या तीन पीढ़ी के बाद अपना संबंध किसी उच्च जाति या प्रभुत्व सम्पन्न जाति से जोड़ती है।
9. प्रो०योगेन्द्र सिंह संस्कृतिकरण की प्रक्रिया को विचारधारा को ग्रहण करने वाली प्रक्रिया का रूप में मानते है।
10. संस्कृतिकरण "हिन्दू वृहत् परंपरा की सोपान क्रम विश्वदृष्टि का विरोध करती है, इसलिए कि परम्परा से हिन्दू धर्म मानने वाली हर जातियों की सामाजिक स्थिति जन्म से ही निर्धारित होती है।
11. संस्कृतिकरण एक प्रकार का विरोधी आन्दोलन (Protest Movement) है।
12. संस्कृतिकरण एक अनुभवाश्रित प्रक्रिया का नाम है। चूंकि संस्कृतिकरण का संदर्भ स्थानीय एवं भारतीय संस्कृति के दायरे में होने वाले परिर्वतन का बौध कराती हैं।
13. संस्कृतिकरण कोई ऐसी प्रक्रिया नहीं है जो सहज भाव से अवनत रूप से चलती रहे क्यो कि प्रभु जाति के लोग संस्कृतिकरण का विरोध करते है।
14. योगेन्द्र सिंह (1973) संस्कृतिकरण को एक प्रत्याशी समाजीकरण समाजीकरण की प्रक्रिया (Anticipatory Socialization) मानते है।
15. संस्कृतिकरण की अवधारणा संदर्भ समूह की अवधारणा से मिलती जुलती है।
16. संस्कृतिकरण की प्रक्रिया विशेषकर उन जातियों के जीवन में चली है, जिन्होंने राजनीति, शिक्षा और आर्थिक क्षेत्रों में अपना कुछ प्रभुत्व स्थापित कर लिया है।

संस्कृतिकरण के कारक

1. 1. भारत की प्राचीन तथा आधुनिक राजनीति व्यवस्थाएं भी संस्कृतिकरण की प्रक्रिया के अनुकूल रही है। प्राचीनकाल में क्षत्रिय एक ऐसा वर्ण रहा है, जिसमें समय-समय पर अनेक जातिय समूह सम्मिलित होते रहे है। जिसका प्रमुख आधार संबंधित जाति इस संदर्भ में विशेष भूमिका निभाती थी।
2. आधुनिक काल में प्रजातंत्रीकरण की प्रक्रिया ने भी संस्कृतिकरण की प्रक्रिया को अनुकूल स्थिति प्रदान की है।
3. 3.यातायात एवं जनसंचार के माध्यमों में क्रांतिकारी परिवर्तन से संस्कृतिकरण की प्रक्रिया को प्रोत्साहित किया है।
4. लघु एवं वृहत् परम्पराओं के बीच अतः क्रियाएं भी बढ़ी है
5. शिक्षा ने पिछड़ी जातियों के शिक्षित लोगों को उच्च एवं प्रभुत्व सम्पन्न जातियों की जीवन शैली को अपनाने की प्रवृति को बढ़ावा दिया है।
6. सामाजिक सुधार आन्दोलन ने भी निम्न जातियों को अपनी स्थिति सुधारने की प्रेरणा दी है।
7. स्वतंत्र भारत के संविधान एवं कानूनों ने भी संस्कृतिकरण की प्रक्रिया को बढ़ावा दिया।
8. नगरीकरण की प्रक्रिया के कारण शहरों में जातिय भेदभाव में कमी आई है। इसके फलस्वरूप संस्कृतिकरण की प्रक्रिया में वृद्धि हुई।
9. धार्मिक तीर्थस्थलों ने भी संस्कृतिकरण के बढ़ावा दिया है।
10. छापे खाने (प्रिन्ट मीडिया) एवं राजनीतिक सम्मेलनों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

संस्कृतिकरण एवं पश्चिमीकरण

संस्कृतिकरण की प्रक्रिया में धार्मिक दृष्टिकोण की प्रधानता होती है, जबकि पश्चिमीकरण की प्रक्रिया में धर्मनिरपेक्ष (Secular) दृष्टिकोण की प्रधानता होती है।
संस्कृतिकरण की प्रक्रिया गैर-प्रभावी जातियों (Non-Dominant) एवं जनजातियों तक सीमित है जबकि पश्चिमीकरण का संबंध निम्न जातियों, जनजातियों एवं उच्च जातियों सभी से है।
संस्कृतिकरण की प्रक्रिया आन्तरिक (Endogenous) है, जबकि परिश्चमीकरण की प्रक्रिया बाह्य (Exogeuous) है।
संस्कृतिकरण एक रूढ़िवादी प्रक्रिया है, जबकि पश्चिमीकरण एक तार्किक (Rational) एवं आधुनिक प्रक्रिया है।
संस्कृतिकरण के आदर्श में क्षेत्रीय भिन्नताएं पायी जाती है, जबकि पश्चिमीकरण के आदर्श ब्रिटिश है।
संस्कृतिकरण: एक आलोचनात्मक दृष्टिकोण (Sanskritization: A Critical View)
संस्कृतिकरण, परसंस्कृति-ग्रहण (Acculturation) का ही एक विशिष्ट रूप है।
श्रीनिवास ने संस्कृतिकरण को एक रेखीय प्रक्रिया (Unilinear Process) के रूप में प्रस्तुत किया है, जब कि संस्कृतिकरण एक दोतरफा प्रक्रिया (Two-way-process) है। संस्कृतिकरण के अन्तर्गत सिर्फ निम्न जाति के लोग उच्च जाति की जीवन शैली को ही नहीं अपनाते, बल्कि इसके विपरित उच्च जाति के लोग भी अपने से निम्न संस्कार की जाति, जो स्थानीय स्तर पर प्रभू जाति (Locally Dominat Caste) है, की जीवन शैली को अपनाते है। इसी प्रक्रिया को मकिम मैरियट ने संकीर्णीकरण (Parochialization) कहा है।
संस्कृतिकरण एक परम्परा अनुकरण की प्रक्रिया है। समाज में निम्न स्तर के लोग संस्कृतिकरण के द्वारा ज्यादा से ज्यादा रूढ़ीवादी बनते है।

संदर्भ ग्रंथ

1. Religion and Society among the Coorgs of South India - 1952, M.N. Srinivas
2. Social Change in Modern India - 1966
3. Caste in Modern India and Other Essays - 1962
4. आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन - M.N. श्रीनिवास
5. भारतीय समाजशास्त्र - योगेन्द्र सिंह
6. समाजशास्त्र के सिद्धांत - राम अहुजा
7. Caste, Society and Politics in India - André Béteille
8. The Structure of Indian Society - A.M. Shah